Roll No. : .... Total Pages : 7

3642-R

B.A. (Third Year) Examination, 2017

SANSKRIT

Paper – II

(इतिहास, दर्शन, अनुवाद, व्याकरण एवं निबन्ध)

Time : Three Hours
Maximum Marks : 100

PART–A [Marks : 20]

(खण्ड–अ)

Answer all questions (50 words each).
All questions carry equal marks.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART–B [Marks : 50]

(खण्ड–ब)

Answer *five* questions (250 words each). Select *one* question from each unit. All questions carry equal marks.

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART–C [Marks : 30]

(खण्ड–स)

Answer any *two* questions (300 words each).
All questions carry equal marks.

कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART–A

(खण्ड-अ)

1. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

UNIT–I

(इकाई–I)

(i) महाभारत में कुल कितने पर्व हैं?

(ii) दो प्रमुख महाकाव्यों के नाम लिखिए।

UNIT–II

(इकाई–II)

(iii) भगवद्गीता में योग का अर्थ क्या है?

(iv) अष्टाङ्ग-योग में आठों अङ्गों के नाम लिखिए।

UNIT–III

(इकाई–III)

(v) 'विष्णु वैकुण्ठ में सोते हैं' वाक्य का संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

(vi) 'श्याम राम से ईर्ष्या करता है' वाक्य का संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

UNIT–IV

(इकाई–IV)

(vii) 'पीतम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय लिखिए।

(viii) 'गन्तुम्' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है? सूत्र सहित लिखिए।

UNIT–V

(इकाई–V)

(ix) 'भारतीय-संस्कृतिः' विषय पर संस्कृत में दो वाक्य लिखिए।

(x) 'परोपकारः' विषय पर संस्कृत में दो वाक्य लिखिए।

PART–B

(खण्ड-ब)

UNIT–I

(इकाई–I)

2. 'यदिहास्ति तदन्यत्र' उक्ति के आधार पर महाभारत के वर्ण्य-विषय की समीक्षा कीजिए।

अथवा

नाटक के 'उद्‌भव और विकास' पर लेख लिखिए।

UNIT–II

(इकाई–II)

3. श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में वर्णित 'स्थित-प्रज्ञ' का निरूपण कीजिए।

अथवा

जैन दर्शन के 'अनेकान्तवाद' की व्याख्या कीजिए।

UNIT-III

(इकाई–III)

4. निम्नलिखित अवतरण का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

(अ) जो चारों ओर से हमें आवृत करता है, वह पर्यावरण है। पर्यावरण के साथ मानव-जीवन का नित्य-सम्बन्ध है। पृथ्वी, जल, आकाश, वनस्पतियाँ और जीव पर्यावरण को बनाने वाले हैं। प्रकृति का सम्पूर्ण रूप ही पर्यावरण कहा जाता है। वर्तमान काल में प्राकृतिक संसाधनों के असंतुलित दोहन से और औद्योगिक विस्तार से हमारी मिट्टी, वायु और जल दूषित हो रहे हैं, इसलिए पर्यावरण दूषित हो जाता है। सुख-स्वरूप वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी निरन्तर पर्यावरण को प्रदूषित करती हुई सुख-शान्ति के लिए नहीं है। हमारे द्वारा प्रत्येक श्वास में विष-पान किया जा रहा है। बहुत से उद्योगों की विषाक्त वायु से पृथ्वी पर ऊष्मा की वृद्धि हो रही है।

अथवा

(ब) श्रीमद भगवद्गीता पुस्तक संस्कृत-साहित्य की गौरवमयी रचना है। महाभारत के युद्ध में अर्जुन को उसके कर्त्तव्य का बोध कराने के लिए श्रीकृष्ण ने जो उपदेश दिया था, वही 'श्रीमद्भगवद्गीता' के नाम से प्रसिद्ध है। यह न केवल सभी उपनिषदों अपितु वेदों का भी सार-तत्त्व प्रस्तुत करती है। गीता का गौरव सभी विद्वान स्वीकार करते हैं। इसका अनुवाद सभी

भारतीय भाषाओं एवं संसार की प्रमुख भाषाओं में किया गया है। यह गीता सभी उपनिषदों का सार है, इसमें भगवान् श्रीकृष्ण ने मनुष्य के सभी आवश्यक कर्त्तव्यों का प्रतिपादन किया है। इसमें कहा गया है कि आत्मा अजर और अमर है, यह न उत्पन्न होती है और न मरती है।

UNIT–IV

(इकाई–IV)

5. निम्नलिखित शब्दों का सूत्र-निर्देशपूर्वक प्रकृति-प्रत्यय लिखिए :

   (i) स्मृत्वा

   (ii) चेयम्

   (iii) गोता

   (iv) लेखनीयम्।

अथवा

निम्नलिखित सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए :

   (i) ऋहलोर्ण्यत्

   (ii) कालसमयवेलासु तुमुन्

   (iii) दण्डादिभ्यो यत्

   (iv) उगितश्च।

UNIT–V

(इकाई–V)

6. 'अनुशासन-महत्त्वम्' विषय पर संस्कृत में निबन्ध लिखिए।

अथवा

'मम प्रिय-कविः' विषय पर संस्कृत में निबन्ध लिखिए।

PART–C

(खण्ड-स)

UNIT–I

(इकाई–I)

7. रामायणकालीन पारिवारिक-आदर्शों का वर्णन कीजिए।

UNIT–II

(इकाई–II)

8. वैशेषिक-दर्शन के पदार्थों का विवेचन कीजिए।

UNIT–III

(इकाई–III)

9. निम्नलिखित शब्दों का सूत्र-निर्देशपूर्वक प्रकृति-प्रत्यय लिखिए :

   (i) हसन्

   (ii) क्रियमाणम्

   (iii) अजा

   (iv) द्रवत्वम्।

UNIT–IV

(इकाई–IV)

10. निम्न अवतरण का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

एक उद्देश्य को लक्ष्य करके बहुत से लोगों का एकता की भावना से कार्य करने वाला समूह संगठन कहलाता है। एकता मनुष्य में शक्ति प्रदान करती है। एकता से ही देश, समाज और संसार उन्नति के पथ पर अग्रसर होते हैं। जिस देश या समाज में एकता है, वही सम्पूर्ण संसार में सम्माननीय होता है। संसार में एकता की अत्यधिक आवश्यकता है। विशेष रूप से इस कलियुग में संगठन ही सभी प्रयोजनों को सिद्ध करने वाला है। इसलिए सभी मनुष्यों में सामाजिक कल्याण के लिए एकता का होना आवश्यक है।

UNIT–V

(इकाई–V)

11. 'गद्यकार-बाणभट्टः' विषय पर संस्कृत में निबन्ध लिखिए।